पाँचवा :-

दौरे के वक्त पानी नहीं पिलाये। बच्चे के मुँह में अंगुली, चम्मच या अन्य कोई वस्तु नहीं डाले। सम्भावना रहती है कि दाँत टूटकर श्वासनली में जाकर श्वसन किया में बाधा उत्पन्न कर दें।

छठा:-

एक- दो व्यक्तियों की प्राथमिक उपचार में आवश्यकता होती है अतः अनावश्यक भीड़ को हटायें ताकि बच्चा खुले स्थान पर अच्छी तरह से साँस ले सके। भीड़ देखकर बच्चा सहम सकता है व मानसिक दबाब में आ सकता है।

सातवाँ:-

दौरा समाप्त होने तक मुँह से कुछ भी नहीं दें। सादा प्रश्न-उत्तरों से निश्चित करें कि बच्चा पूर्ण होश में है, तभी डॉक्टर द्वारा लिखी दवाईयों या पानी दें।

आठवाँ:-

दौरे ज्यादातर अपने आप समाप्त हो जाते है। यदि बच्चा बड़ा है या समझता है तो सरलता से बतायें कि क्या हुआ है, उसकी सुविधा के लिये बता दें कि वह कहाँ है। यदि कपड़े मल-मुत्र से खराब हो गये है तो सफाई करे अथवा करने में सहायता करें तथा उसे समझायें कि इसमें उसका कोई दोष नहीं है।

नवाँ:-

दौरे के बाद यदि बच्चा सिर दर्द या शरीर में हल्के दर्द या पेट दर्द की शिकायत करता है तो उसे पैरासिटोमोल देने से लाभ होगा।

यदि परेशानी अधिक है अथवा बुखार के साथ दौरा आया है तो बच्चों के डॉक्टर को दिखायें। **पानी में दौरा आने पर:**

बच्चें को जल्दी से जल्दी पानी से बाहर निकाले, उसके सहारा देकर सिर पानी के स्तर से ऊपर रखें, बाहर निकालते ही यह देखें कि बच्चा श्वास ले रहा या नहीं, यदि नहीं तो तुरन्त प्राथमिक उपचार (CPR) शुरू करें व जल्दी से चिकित्सक को दिखायें। यदि बच्चा ठीक है तो भी परामर्श लें।

अन्य सूचनायें जो सहायक है :

- दौरे का दिन, समय या अवधिदौरे के पहले बच्चा क्या कर रहा था व दौरा शुरू कैसे हुआ, दौरा शुरू होने से पहले उसके कुछ महसूस हुआ ।
- क्या बच्चा पहले से ही बीमार था।
- दौरों की बताई गई दवाईयाँ नियमित बच्चें द्वारा ली जा रही है।
- क्या कोई अन्य दवाई चल रही है।
- बच्चें के शरीर में हलचल एक तरफ थी या दोनों तरफ।
- दौरे के समय क्या बच्चा बात करने की स्थिति में था व आपके पूछे गये प्रश्नों का उत्तर दे रहा था।
- दौरे के बाद क्या बच्चा भ्रमित (Confused) था या थकावट महसूस कर रहा था।

वर्जित बातें (जो नहीं करनी है) :

- जूता, प्याज व चाबी नहीं सुधायें यह निरर्थक है बल्कि नाक द्वारा हानिकारक कीटाणु प्रवेश कर नुकासान कर सकते है।
- दौरे के समय नाक बंद नहीं करें व चुटकी नहीं भरेअन्यथा सॉस लेने में परेशानी हो सकती है व दौरे कीतीव्रता भी बढ़ सकती है।
- यह देवी-देवता या ऊपरी हवा का असर नहीं होता जिसके ईलाज के लिये जन्तर या ताबीज पहिनाना या झाड़फूक करवाना व्यर्थ है, इनसे कोई लाभ नहीं होता है। यह मस्तिष्क की बीमारी है जिसका ईलाज बिना देरी के बच्चों के न्यूरोलोजिस्ट से करवाना चाहिये।

Resources

- epilepsy.org.uk.
- epilepsy.com
- epilepsymumbai.org

JAIPUR CHILD NEURO CARE

बच्चों में मिर्गी

सूचना पत्र

DR. VIVEK JAIN

Child Neurologist and Epileptologist

MD(PGI, Chandigarh), FRCPCH(UK)

CCT(UK) child Neurology

www.jaipurchildneuro.com

vivekchildneuro@gmail.com

Appointment / Helpline No:

0141-4156680

बच्चों में मिर्गी रोग

मिर्गी / ताण / दौरे / झटके :

दिमाग तरंगों से शरीर को नियन्त्रित करता है। जब इन तरंगों में बाधा उत्पन्न होती है तो दौर आने लगते हैं। इससे मस्तिष्क के जिस भाग में गतिरोध रुकावट होता है उससे संचालित अंग प्रभावित होते है और अलग-अलग तरह के लक्षण आते है।

जब अकारण दौरे दो या अधिक बार आते है तो उन्हें "मिर्गी" कहते है।

प्रकार:-

1. पूरे शरीर के दौरे (Generalised Seizures):

बच्चे के पूरे शरीर में दौरे आते है, वह जमीन पर गिर सकता है। वह दौरे के समय अचेत हो सकता है व मल-मूत्र भी निकल सकता है।

2. एक तरफ के दौरे या आंशिक दौरे (Focal Seizures):

बच्चें को अजीब सा महसूस होता है व शरीर के एक हिस्से में झटके आते है। (जैसे दायां व बायां हाथ)

3. क्षणिक दौरे (Absentia):

बार-बार रोज बच्चा कुछ क्षण के लिये गुमसुम या चुप हो जाता है।

कारण:-

कई बार दौरों का कोई कारण नहीं मिलता (unknown) फिर भी सम्भावित कारण निम्न हो सकती है :-

1. जन्म के समय बच्चे के दिमाग में ऑक्सीजन नहीं पहुँचना (बच्चे का देर से रोना) या शुगर कम होना (बच्चे को दूध देरी से पिलाना या बच्चे का दूध न ले पाना)
2. खाने-पीने की वस्तुओं के द्वारा दिमाग में परजीवी या अण्डे पहुँचना (Neurocysticercosis) |
3. अनुवांशिक (जैनेटिक) ये दौरे उम्र आधारित होते है जिनका सम्बन्ध गर्भावस्था में दिमाग की बनावट से है।

जाँचें :-

बच्चों के न्यूरोलोजिस्ट बच्चें की पूर्ण जॉच व ई.ई.जी. (EEG) की तरंगों का अध्ययन कर यह निश्चित करते है कि मिर्गी रोग किस प्रकार का है। आवश्यकता पड़ने पर बच्चे के दिमाग का एम.आर.आई (MRI) भी होता है।

अतिआवश्यक :-

दौरे के समय जो भी व्यक्ति पास में उपलब्ध है। वह अपने मोबाइल से दौरे का शुरू से अन्त तक का विडियो बनाये, जिससे चिकित्सक को निदान करने में सहायता मिल सके। वह ऐसा कई बार कर सकते है अगर दौरे बार-बार आते है।

ईलाज :-

कई बच्चों में दौरा एक बार ही आता है, दुबारा आता ही नहीं है। उनमें उपचार की ज्यादातर आवश्यकता नहीं है। दो या अधिक बार दौर आने पर ईलाज आवश्यक होता है।

दवाईयों :-

सर्वप्रथम दवाईयों से दौरे बंद किये जाते हैं। कई बार एक प्रकार की दवाई असर नहीं करती तो अन्य प्रकार की दवा बदल कर या दो-तीन दवाईयाँ एक साथ दी जाती है। कुछ बच्चों में एक दवाई लाभ करती है किन्तु वही दवादूसरों बच्चों में प्रभावहीन होती है।

यदि बच्चा समझता है तो उसे दवाइयों के बारे में समझाकर विश्वास में ले तथा डॉक्टर को बतायें कि किस तरह का ईलाज बच्चे को पसंद है। इससे बच्चें में चिन्ता कम होगी व ईलाज में उसका सहयोग मिलने से दौरों के नियंत्रण करने में मदद मिलती है।

मिर्गी सर्जरी (Epilepsy Surgery) :-

यदि दवाईयों से कोई लाभ नहीं होता है और दिमाग की बनावट में दोष (खोट से दिमाग के एक हिस्से से दौरे आते है तो ऐसे बच्चों में सर्जरी की सलाह दी जाती है, इसमें दौरे के कारण को ही हटा दिया जाता है। दिमाग की जिस भाग का ऑपरेशन होता है उसका ज्यादातर शरीर में कोई विशेष कार्य नहीं होता।

कीटोजैनिक भोजन (Ketogenic Diet) :-

जिन बच्चों में दवाईयों से लाभ नहीं होता है व सर्जरी होना सम्भव नहीं है, उन्हें इस भोजन की सलाह दी जाती है, जिसमें वसा (Fat) की मात्रा अधिक होती हैं।

ध्यान रखें :-

मिर्गी रोग की दवाईयाँ लम्बे समय तक वह भी कम से कम दो वर्ष तक दी जाती है। अतः दवाईयाँ देते रहे व धैर्य रखें। दवाईयाँ बीच में ही बार छोड़ने पर पुनः दुबारा शुरू ही करनी पड़ती है। कई बार वापिस चालू करने पर असर भी पूरा नहीं होता। यदि बच्चे में अन्य रोगों की दवाईयों चल रही है तो चलने दें। मिर्गी रोग की दवाओं के चलने की मनाही नहीं है । अपने डॉक्टर को इसकी जानकारी दें।

तेज दौरे के समय:-

बच्चें की देखभाल करने वाले जैसे घर पर माता-पिता या अन्य पारिवारिक सदस्य या स्कूल में अध्यापक को पता होना चाहिये कि दौरा आने की स्थिति में क्या करना है। चूँकि ये दौरे देखने में डरावने लग सकते है, ऐसी स्थिति में स्वयं को शान्त रहकर बच्चे को सुरक्षित रखें। कभी-कभी दौरे या तो लम्बे समय तक आते है या समूह के रूप में बार-बार पर छोटे होते है।

बच्चें के दौर का विडियो लेकर बच्चों के न्यूरोलोजिस्टसे परामर्श लें।

दौरा आने पर निम्न कदम लिये जाने चाहिये, इस सम्बन्ध में महत्वपूर्ण सुझाव दिये जा रहें हैं:-

पहला:-

स्वयं शान्त रहकर दूसरों को सात्वंना दे व ढाढसबधायें।

दूसरा:-

किसी चोट या दुर्घटना से बचने के लिये खतरनाक स्थान व वस्तुओं से दूर रखें। जैसे सिढ़ियाँ अथवा व्यस्त गली या बाजार से सुरक्षित स्थान पर ले जाये। खतरनाक वस्तुए जैसे - काँच का सामान, धारदार या कठोर वस्तुएं, बिजली के तार आदि पास से हटा दें जिससे बच्चा सुरक्षित हो सके।

दौरे के समय शरीर सख्त होने के कारण सॉस लेना बन्द हो सकता है व नीला पड़ सकता है। इस समय प्राथमिक उपचार देने की आवश्यकता नहीं है। कुछ क्षणों बाद मांसपेशिया ढीली होने पर बच्चा पुनः सांस ले लेता है।

बच्चे का सिर एक तरफ करें व उसके नीचे कोई मुलायम वस्तु या तकिया लगावें बच्चें की हलचल (Movements) को नहीं रोकें।

तीसरा:-

दौरे की अवधि व प्रकृति का ध्यान रखें व शुरू होते ही समय नोट कर लें तथा पता करें कि दौरा कितने समय का आया। यदि दौर पहली बार आया है या पाँच मिनिट से ज्यादा समय हो गया है तो आपातकालीन सेवाओं को फोन करें।

चौथा:-

यथासम्भव बच्चें को सुविधा जनक स्थिति में रखें। यदि चश्मा लगा हो तो हटा दे, ताकि टूटे नहीं।

बच्चे के मुँह में यदि खाने-पीने की कोई वस्तु है तो बाहर निकालने की कोशिश करें। एक तरफ करवट लिवायें या आसानी से धीरे-धीरे सिर एक तरफ मोड़ दे, ताकि पानी या लार मुँह के एक तरफ से बाहर आ जाये, जिससे बच्चें को साँस लेने में दिक्कत नही हो। कपड़े, बेल्ट, जूते व बटन खोल कर ढीला कर दे। गले के चारों तरफ कपड़ा, जन्तर व ताबीज ढीला कर दें ताकि बच्चा सहज रहें तथा सॉस लेने में आसानी रहें। यह भी देखे कि बच्चें को सॉस लेने में बाधा तो नहीं है, यदि है तो श्वास नली साफ करें।